ISSN: 0973-0583

बुद्ध के सिद्धान्त पर आधारित शांति शिक्षा

राकेश कुमार सिंह

शोध छात्र, शिक्षा संकाय, कैपिटल विश्वविद्यालय, कोडरमा, झारखण्ड

सार

पंचशील के सिद्धात को ग्रहण करके मनुष्य का जीवन सुखी रह सकता है और विश्व में शांति स्थापित किया जा सकता है। ऐसी विषम परिस्थिति में तथागत गौतम बुद्ध का जन्म ऐसे एक युगपुरुष के रूप में हुआ जिन्होंने मानवीय समस्याओं के कारण एवं इनके निदान के उपायों का सही मार्ग प्रस्तुत किया तथा मानव को शांति का संदेश दिया। मानव को भाग्यवादी बने रहने के बजाय चेतनावादी, बुद्धिवादी बनने के लिए प्रेरित किया। मानसिक गुलामी को त्यागकर उनमें एक चेतना पैदा करने पर बल दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि विश्वास के स्थान पर तर्क को प्राथमिकता दी जाय जिसके फलस्वरुप बुद्ध के संदेश एवं उपदेश दुनिया के देशों में फैला । बुद्ध ने मानव की चेतना की नई किस्म से साक्षात्कार किया तथा बिना एक बुँद खून बहाए विश्व शांति की स्थापना की। दुनिया के लोगों में परस्पर दया, करुणा, मैत्री, सद्भाव, प्रेम को जाग्रत कर पुनः की शांति कायम किया जा सकता है। बौद्ध धम्म भारतीय धम्म है। यही एक मात्र ऐसा धम्म है, जिसने सारे संसार को भारत की संस्कृति, सभ्यता का वास्तविक स्वरूप प्रदान किया है। मानवता के प्रति दया, करुणा, मैत्री का संदेश इसी धम्म ने दिया। इस धम्म के कारण भारत को विश्व गुरु कहलाने का गौरव प्राप्त हुआ। भगवान बुद्ध जिसे धम्म कहते हैं वह अन्य सभी धर्मों से सर्वथा भिन्न है। भगवान बुद्ध ने कहा कि जाति नहीं, असमानता नहीं, ऊँच-नीच की भावना नहीं होनी चाहिए। उनका सिद्धान्त था कि किसी आदमी के जन्म से नहीं, बल्कि उसके कर्म से ही उसका मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

शब्द कुँजीः पंचशील, पंचशील, करुणा,धम्म, बुद्धत्व, प्रज्ञा, शील, विश्वशांति।

परिचयः

बौद्ध दर्शन में शांति के लिए शिक्षा के लिए बेहद जरूरी है। बौद्ध दर्शन की पहचान ही अपने मूल रूप में एक नीतिगत दर्शन की रही है। भगवान बुद्ध एक ऐसे समाज में अपना कार्य आरम्भ करते हैं जो तरह-तरह के मतवादों, कर्मकाण्डों एवं पाखण्डों में लीन थे एवं उसका वास्तविक मूल्यगत जीवन क्षीणता का शिकार हो रहा था। उस स्थिति में उन्होंने जिस विश्वदृष्टि को सामने लाया एवं अपने धर्म की स्थापना की यह समकालीन सन्दर्भ में बेहद महत्त्वपूर्ण है। भगवान बुद्ध ने बड़े-बड़े तात्विक प्रश्नों को अव्याकुल कहकर उन पर मौन साध लिया एवं व्यावहारिक जीवन को पीड़ा एवं हताशा से दूर करने के निर्मित्त शिक्षा दी। समकालीन समाज भी तात्विक प्रश्नों में नहीं उलझना चाहता बल्कि ऐसी दिशा चाहता है जो उसके इहलौकिक जीवन के लिए कारगर हो। बुद्ध ने दुःख को पारमार्थिक सत्य के रूप में प्रतिपादित किया एवं सर्वम् दुःखम् के द्वारा जीवन की वास्तविकता को गहराई से महसूस करने को प्रेरित किया। उन्होंने दुःख के कारण एवं निवारण का प्रतिपादन किया एवं जीवन भर यह प्रयास करते रहे कि उनके बताए आर्य सत्य को लोग समझें। आर्य सत्य की संकल्पना शांति शिक्षा के लिए बेहद उपयोगी है। शांति का संचार कोई यांत्रिक प्रक्रिया नहीं है। व्यक्ति दुःख एवं दुःख के कारणों को जब गहराई से समझता है और उनके व्याघात एवं असंगतता से परिचित होता है तभी वह संगत एवं मूल्यगत जीवन की ओर बढ़ सकता है। शांति शिक्षा की बुनियाद के रूप में इस प्रकार की विश्व दृष्टि समकालीन सन्दर्भ में बेहद उपयोगी है। प्रज्ञा-शील, समाधि रूपी अष्टांगिक मार्ग, हत्या, चोरी, कामवासना, झूठ एवं नशा के निषेध रूपी पंचशील का सिद्धान्त, करूणा की संकल्पना एवं उपाय कौशल्य की अवधारणा आदि का शांति शिक्षा के समकालीन परिप्रेक्ष्य में बेहद महत्त्व है। शांति शिक्षा केवल बौद्धिक विलास न रह जाए इसके लिए बौद्ध मार्ग द्वारा प्रचलित विपस्यना ध्यान को मूल्य शिक्षा के साथ जोड़ना बेहद उपयोगी साबित हो सकता है। यह शोध इन तमाम पहलुओं को घ्यान में रखते हुए बुद्ध के

सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में शांति शिक्षा की संभावना को तलाशने का प्रयत्न करेगा। मनुष्य सर्वोच्च है। वह खुद अपना मालिक है। इस संसार में इसके बराबर अन्य कोई शक्ति नहीं है जो इस के भाग्य का निर्णय करे। बुद्ध ने कहा कि व्यक्ति स्वयं अपना मालिक है। भला इस का दूसरा मालिक कौन हो सकता हैं। उन्होंने कहा कि किसी अन्य व्यक्ति से सहायता या शरण मत माँगों। उन्होंने सिखाया और प्रेरित किया कि प्रत्येक व्यक्ति को अपना विकास तथा मुक्ति का मार्ग स्वयं ढूँढ़ना चाहिए क्योंकि मनुष्य में अपने को परिश्रम तथा अपनी बुद्धि द्वारा सभी बंधनों, कुण्ठाओं, लालसाओं, वासनाओं से मुक्त करने की शक्ति है।

तथागत कहते हैं कि तुम्हें स्वयं चलना है मैं तो केवल रास्ता बतानेवाला हूँ। मैंने इसे स्वयं ढूँढ़ा है। इस व्यक्तिगत जिम्मेवारी के सिद्धान्त पर ही उन्होंने अपने अनुयायियों को पूरी स्वतंत्रता दी। बुद्ध ने कार्य-कारण-नियम देकर जनता को यह संदेश दिया कि कोई भी कार्य बिना कारण के नहीं हो सकता है। उस कारण का निवारण कर देने पर कार्य सम्पन्न हो जाता है। तथागत बुद्ध के अनुसार धम्म के दो प्रधान तत्व हैं प्रज्ञा तथा करुणा। इसके बिना न समाज जीवित रह सकता है, न समाज में शांति और मैत्री का धम्म स्थापित हो सकता है। प्रज्ञा और करुणा का अनिवार्य सम्मिश्रण ही तथागत का धम्म है। धम्म में जो नैतिकता है, उसका सीधा मूल स्त्रोत आदमी को आदमी से मैत्री करने की आवश्यकता पर बल देता है। अपने भले के लिए ही यह आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति सभी जीवों से मैत्री करें।

बुद्ध द्वारा उद्‌भावित धर्म अक्षरों द्वारा नहीं बताया जा सकता, न इस का उपदेश दिया जा सकता है और न ही इस को सुनकर ग्रहण किया जा सकता है। उस को एक लौकिक धर्म का रूप देकर ही लोगों के हृदय में इस की उदात्त विचारधारा का संचार किया जा सकता है। दूसरे अर्थों में बौद्ध धर्म की विचारधारा ऐसे ही अनुप्राणित करनेवाली प्रतीत होती है। इसलिए उसके उपदेश की कोई बहुत आवश्यकता दिखायी नहीं देती। इस प्रकार बौद्ध धर्म के प्रति जो नया दृष्टिकोण है वह सर्वथा व्यावहारिक है। गौतम बुद्ध ने स्पष्ट कहा है कि ज्ञान के साथ लोक में मनुष्यों के प्रयोजन, हित और सुख के लिए विचरण करो।

शोध की समस्याः-

बिहार प्राचीन काल से ही राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक चेतना का केन्द्र-बिन्दु रहा है। चन्द्रगुप्त, सम्राट अशोक एवं गुरू गोविन्द सिंह जैसे महापु3षों का सीधा सम्बन्ध बिहार की मिट्‌टी से रहा है। गौतम बुद्ध तथा महावीर को ज्ञान दीप्ति बिहार से ही मिली, जिसके फलस्वरूप उनका धर्म दुनिया के कोने-कोने तक पहुँचा। शिक्षा के क्षेत्र में नालन्दा, तेल्हाड़ा, ओदन्तपुरी और विक्रमशिला जैसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विश्वविद्यालय बिहार में ही थे। मध्यकाल में महान शासक शेरशाह की कर्मभूमि बिहार में ही थी। यह क्षेत्र उसके प्रशासनिक सुधारों की प्रयोगशाला रही है।

आधुनिक काल में भी कई महापुरुष हुए जिन्होंने कई ऐसे कार्य किए जो आज भी कई मामले में प्रासांगिक है। शांति मानव के निन्तर एवं सवार्गींण विकास के लिए पहचान अनिवार्य है। प्राचीन काल से लेकर वर्त्तमान समय तक मानव शांति की खोज के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहा है। मानव का कल्याण शांति में ही निहित है, अशांति में कतई संभव नहीं। शांति कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे मनुष्य चाहे या न चाहे, जाने या अनजाने पा लें, या अपना लें, इसका एहसास मानव को तब होता है जब इसकी चेतना अज्ञानता का सीमाओं को पार कर अंधविश्वास की बेड़ियों को तोड़ कर अपने ज्ञान रूपी दीपक के प्रकाश में स्वयं प्रकाशमान होता है अर्थात्‌ बुद्धत्व (ज्ञान) की प्राप्ति ही शांति की प्राप्ति है।

मनुष्य की चेतना तथा बुद्धि के विकास में असीम क्षमता होती है किन्तु अज्ञानता अंधविश्वास एवं पूर्वाग्रह से ग्रस्त रहने के कारण आज तक मानव ने काल्पनिक एवं सर्वशक्तिमान ईश्वर के अस्तित्व को गरिमा मंडित कर मानव के ज्ञान को इतना कुंठित कर दिया है कि मानव अपना मालिक स्वयं होते हुए भी अपने आप को निर्बल एवं असहाय समझ बैठा है। ऐसी हालत में मानव बिल्कुल निष्क्रिय सा हो गया है। आज मानव की स्थिति मृग के समान हो गया है जो अपनी ही नाभी में कस्तुरी गंध को जंगल के घास में ढूढ़ता फिरता है, इसी तरह मानव की शांति अंततः विश्वशांति का शिल्पीकार एवं वस्तुकार होते हुए भी आज विश्वशांति का बात तो दूर रही, इन शास्त्रों का निर्माण जैसे भी हुआ हो, जिसके लिए हुआ हो वे सभी निरर्थक, वेबुनियाद एवं अनावश्यक है तथा विश्वशांति के लिए घातक है। ये सब तो अहोभाग्य इन विकसित एवं अहंकारी राष्ट्रों के अहंकार का परिणाम है जो विश्वशांति की ढिढ़ोरा पीटते हुए तथा विश्व के अन्य देशों से

अत्याधुनिक शास्त्रों की आपूर्ति करते हुए विश्व में शांति स्थापित करना चाहते हैं। यह मानवता के साथ स्थापित की जा सकती है? कदापि नहीं। अंधकार तो सिर्फ प्रकाश से दूर किया जा सकता है। घृणा को केवल प्रेम से जीता जा सकता है। असत्य को केवल सत्य से ही जीता जा सकता है। हिंसा का अंत अंहिसा से ही संभव है एवं मन की शांति अर्थात् विवेकपूर्ण संयम द्वारा चिरस्थायी शांति की स्थापना की जा सकती है।

शांति शिक्षा की स्पष्टता दार्शनिक विमर्श से ही पैदा होगी क्योंकि मूल्य दर्शन की ही केन्द्रीय विषयवस्तु है। इसीलिए मैंने बुद्ध के सिद्धान्त पर आधारित शांति शिक्षा: एक ऐतिहासिक अध्ययन का निर्णय लिया। ऐसा इसलिए नहीं है कि बौद्ध दर्शन पर आधारित मूल्य शिक्षा पर बात नहीं की जा सकती बल्कि इसलिए कि सामान्यत: शांति शिक्षा पर शोध शिक्षा विभागों में होते रहे हैं और वहाँ यह उन्हीं दार्शनिकों के परिप्रेक्ष्य में अधिक होते हैं जिनका शिक्षा दर्शन प्रचलित है। यह जरूरी है कि दर्शन विभागों में शांति शिक्षा पर शोध को बढ़ावा मिले एवं विभिन्न दर्शनों के आलोक में इसका अध्ययन हो सके।

पंचशील के सिद्धांत को ग्रहण करके मनुष्य का जीवन सुखी रह सकता है और विश्व में शांति स्थापित किया जा सकता है। ऐसी विषम परिस्थिति में तथागत गौतम बुद्ध का जन्म ऐसे एक युगपुरुष के रूप में हुआ जिन्होंने मानवीय समस्याओं के कारण एवं इनके निदान के उपायों का सही मार्ग प्रस्तुत किया तथा मानव को शांति का संदेश दिया। मानव को भाग्यवादी बने रहने के बजाय चेतनावादी, बुद्धिवादी बनने के लिए प्रेरित किया। मानसिक गुलामी को त्यागकर उनमें एक चेतना पैदा करने पर बल दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि विश्वास के स्थान पर तर्क को प्राथमिकता दी जाय जिसके फलस्वरूप बुद्ध के संदेश एवं उपदेश दुनिया के देशों में फैला । बुद्ध ने मानव की चेतना की नई किस्म से साक्षात्कार किया तथा बिना एक बुँद खून बहाए विश्व शांति की स्थापना की। दुनिया के लोगों में परस्पर दया, करुणा, मैत्री, सद्भाव, प्रेम को जाग्रत कर पुन: शांति कायम किया जा सकता है। परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि हम मानव बुद्ध के उपदेशों, संदेशों, उनके सिद्धांतों को कितना अपनाते हैं तथा अपनाकर, उनके द्वारा बताए गए मार्गों पर चलकर ही विश्व का कल्याण किया जा सकता है और विश्व में शांति की स्थापना की जा सकती है।

शिक्षा की व्यवस्था- बौद्ध धर्म के विचारों तथा सिद्धान्तों का प्रसार मठों में हुआ था। ये मठ (विहार) न केवल धर्म के केन्द्र थे, वरन् विद्या के भी केन्द्र थे, जहाँ भिक्षुओं को शिक्षा प्रदान की जाती थी। बौद्ध-संसार अपने मठों से पृथक् था। स्वतंत्र रूप से शिक्षा प्राप्त करने का कोई अवसर नहीं देता था। धार्मिक और लौकिक सभी प्रकार की शिक्षा भिक्षुओं के हाथ में थी। उच्च शिक्षा की प्रशंसा में डॉ0 ए0 एस0 अल्तेकर ने लिखा है- मठों ने उच्च शिक्षा में अपनी दक्षता से कोरिया, चीन, तिब्बत और जावा जैसे सुदूर देशों से छात्रों को आकर्षित करके, भारत की अंतर्राष्ट्रीय ख्याति में वृद्धि की।

बौद्ध शिक्षा का उद्देश्य :

मोक्ष तथा आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए इस युग की शिक्षा एवं शांति का विकास हुआ था। आत्मनियंत्रण, चरित्र-निर्माण तथा सामाजिकता की भावना भरने के साथ-साथ शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास करना था। बौद्ध शिक्षा मुख्यत: निर्वाण-प्राप्ति तथा धर्मप्रचार के लिए की जाती थी। मनुष्य अपने सुख, शांति के लिए करता है। बौद्ध शिक्षा-प्रणाली का एक महान उद्देश्य था वैदिक शिक्षा-प्रणाली के विपरीत बिना किसी भेद-भाव क सभी जातियों के लिए शिक्षा का प्रसार करना। इसीलिए इस शिक्षा-प्रणाली में सार्वजनिक शिक्षा-प्रसार पर विशेष रूप से ध्यान दिया गया। जिस प्रकार वैदिक युग में 'यज्ञ' संस्कृति के केन्द्र थे, उसी प्रकार से बौद्ध युग में 'संघ' शिक्षा और विद्या के केन्द्र थे।''

बौद्ध शिक्षा-प्रणाली का उद्देश्य शिक्षार्थियों में अहिंसा,शांति, प्रज्ञा, शील, करुणा, विश्व-मैत्री शांति आदि की भावना का प्रसार करना था। प्राचीन भारतीय शिक्षा के उद्देश्य की विवेचना करते हुए अल्तेकर ने लिखा है- आध्यात्मिकता तथा धार्मिकता की भावना, चरित्र-निर्माण, व्यक्तित्व-विकास, नागरिक तथा सामाजिक कर्त्तव्यों का पालन, सामाजिक कुशलता की उन्नति तथा राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण और प्रसार प्राचीन भारतीय शिक्षा के मुख्य उद्देश्य थे।

समस्या कथन

समकालीन दौर में शांति शिक्षा की जरूरत प्राय: सभी समाजों द्वारा समझा जा रहा है और इसे लागू करने

के विभिन्न प्रयास हो रहे हैं। भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष एवं बहुलतावादी समाज में जो संस्कृति, धर्म एवं भाषा के स्तर पर व्यापक विविधताएँ रखता है। मूल्य शिक्षा को बिल्कुल दार्शनिक पृष्ठभूमि से काटकर नहीं देखा जा सकता। शांति क्या है, शांति शिक्षा क्या है एवं इसका सफल सम्प्रेषण कैसे हो पाएगा ये ऐसे बुनियादी प्रश्न हैं जिनका उत्तर विभिन्न दर्शनों के संदर्भ में अध्ययन से ही निकल सकता है। बौद्ध दर्शन की पृष्ठभूमि उत्तम प्रतीत होती है। बौद्ध दर्शन शांति शिक्षा के लिए ऐसी दार्शनिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है जो समकालीन भारतीय समाज के लिए उपयोगी एवं व्यावहारिक हो? इन्हीं समस्याओं के आलोक में बौद्ध दर्शन पर आधारित शांति शिक्षा पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन का प्रयत्न है।

समकालीन संदर्भ में विश्वव्यापी स्तर पर शांति शिक्षा की जरूरत को महसूस किया जा रहा है और इसके स्वरूप को लेकर अध्ययन चल रहे हैं। परन्तु शांति शिक्षा क्या है और इसे कैसे सफलतापूर्वक शिक्षा प्रणाली से जोड़ा जाए। यह बहुत स्पष्ट नहीं है। भारत में भी विभिन्न दर्शनों के आलोक में इस पर कार्य हो रहे हैं, विशेषकर समकालीन भारतीय विचारक महात्मा गाँधी, रविन्द्रनाथ टैगोर, महर्षि अरविन्द, विवेकानन्द, कृष्णमूर्ति आदि के विचारों के संदर्भ में। परन्तु शांति शिक्षा की स्पष्टता एवं व्यावहारिकता के लिए इसका विभिन्न दर्शनों के आलोक में अध्ययन जरूरी है। बौद्ध दर्शन विश्वदृष्टि, नीति एवं साधना तीनों ही दृष्टियों से शांति शिक्षा के लिए बेहद उपयुक्त आधार प्रदान करता है। परन्तु शांति शिक्षा के सन्दर्भ में इसका अध्ययन कम ही हुआ है। इस अध्ययन का उद्देश्य बौद्ध दर्शन के सन्दर्भ में शांति शिक्षा की सद्भावना पर विमर्श करना है। बौद्ध दर्शन एक नीति केन्द्रित दर्शन रहा है और शांति शिक्षा के सन्दर्भ में इसके परिप्रेक्ष्य को रखे बिना इस पर चल रहे बहस एवं प्रयोगों को पूर्णता नहीं मिल सकती। इसलिए यह शोध इस उद्देश्य को ध्यान में रखेगा कि शांति शिक्षा पर चल रहे समकालीन विमर्श के सन्दर्भ में यह योगदान करेगा।

शांति का महत्त्व

बौद्ध शांति शिक्षा एक राष्ट्रीय महत्त्व की विषयवस्तु बन चुका है। इस पर विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में अध्ययन हो रहे हैं। शांति मूलतः दर्शन का विषयवस्तु रहा है। दर्शन के क्षेत्र में इस पर अपेक्षाकृत कम अध्ययन हो रहा है। यह अध्ययन शांति शिक्षा के दार्शनिक महत्त्व को सामने लाते हुए दार्शनिक दृष्टि से इसके अध्ययन को बढ़ावा देने वाला होगा। शांति शिक्षा की संकल्पना तब तक पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो सकती जब तक कि दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में इसका अध्ययन सम्पादित न हो। शांति शिक्षा का दर्शन क्या हो इसे स्पष्ट करना नितान्त जरूरी है। बौद्ध दर्शन इसके लिए बेहद उपयोगी है और उसके परिप्रेक्ष्य में किया गया अध्ययन शांति शिक्षा की दशा एवं दिशा को स्पष्ट करने में योगदानकारी होगा। यह एक अन्तर्विषयक अध्ययन है और इसकी उपयोगिता जहाँ एक ओर शिक्षा एवं दर्शन जनसमुदायों के लिए है वहीं यह सम्पूर्ण समाज के लिए भी उतना ही उपयोगी साबित होगा। इस अध्ययन का महत्त्व सिर्फ सैद्धान्तिक नहीं होगा। शांति शिक्षा एक व्यावहारिक विषयवस्तु है इसलिए यह अध्ययन बुद्ध सिद्धान्त के व्यावहारिक महत्त्व को सामने लाने वाला होगा। वर्तमान में दर्शन के व्यावहारिक पहलू को केन्द्र में लाने का प्रयत्न हो रहा है जिससे यह विषय शुष्क सैद्धान्तिकता से बाहर निकलकर समाज के लिए उपयोगी साबित हो।

आज पूरी दुनिया ही मानव एटम बमों की ढेर पर टिकी है। विध्वंसकारी हाथियार एवं रासायनिक हथियार जमा करने की होड़ मची हुई हैं। यह पूरी मानवता को विनाश के कतार पर लाकर खड़ा कर दिया है। ऐसी विकट परिस्थिति में बुद्ध के सिद्धान्तों पर चलकर ही विश्व के विनाश से बचाया जा सकता है। बुद्ध ने कहा था कि विश्व में जब भी कोई मनुष्य जन्म लेता है तो खाली हाथ आता है और जब मरता है तो भी खाली हाथ वापस चला जाता हैं। अतः आप विश्व के इस धरोहर, शांतिमय मानवता का निर्माण नहीं कर सकते तो आप इस शांतिमय वातावरण की अशांत करने का कोई अधिकार नहीं है। मानव के हर कार्य की परिणति स्वयं के विवेक से होती है और अपने को पहचानना ही मानव को मानव होने का परिचायक है, स्वविवेक के अस्तित्व को अस्वीकार करना तथा अलौकिकता के अस्तित्व को स्वीकार करना बेहद बेवकूफी हैं तथा सभी दुखो की आमंत्रण देने के समान है। अतः अपने को पहचान ही शांति का मूलमंत्र हैं। दुनिया में विश्वशांति के सबसे बड़े वास्तुकार एवं शिल्पीकार आज से ढाई हाजार पूर्व महामानव तथागत गौतम बुद्ध पैदा हुए जिन्होंने राजसुख को त्यागकर तपस्या के बल पर अमूल्य ज्ञान को प्राप्त किया। इनके द्वारा दिया गया मंत्र आज विश्व की रोशनी दिखा रहा है।

निष्कर्ष:

शांति मानव के निन्तर एवं सवार्गीण विकास के लिए पहचान अनिवार्य है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक मानव शांति की खोज के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहा है। क्योंकि मानव का कल्याण शांति में ही निहित है, अशांति में कतई संभव नही। शांति कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे मनुष्य चाहे या न चाहे, जाने या अनजाने पा लें या अपना लें, इसका एहसास मानव को तब होता है जब इसकी चेतन अज्ञानता का सीमाओं को पार कर अंध ाविश्वास की बेडियों को तोड़ कर अपने ज्ञान रूपी दीपक के प्रकाश में स्वयं प्रकाशमान होता है अर्थात बुद्धत्व (ज्ञान) की प्राप्ति ही शांति की प्राप्ति हैं। आज पूरी दुनिया ही मानव एटम बमों की ढेर पर टिकी है। विध्वंसकारी हथियार एवं रासायनिक हथियार जमा करने की होड़ मची हुई हैं। यह पूरी मानवता को विनाश के कतार पर लाकर खड़ा कर दिया है। ऐसी विकट परिस्थिति में बुद्ध के सिद्धान्तों पर चलकर ही विश्व के विनाश से बचाया जा सकता है। बुद्ध ने कहा था कि विश्व में जब भी कोई मनुष्य जन्म लेता है तो खाली हाथ आता है और जब मरता है तो भी खाली हाथ वापस चला जाता हैं। अत: आप विश्व के इस धरोहर, शांतिमय मानवता का निर्माण नहीं कर सकते तो आप इस शांतिमय वातावरण को अशांत करने का कोई अधिकार नहीं है। मानव के हर कार्य की परिणति स्वयं के विवेक से होती है और अपने को पहचानना ही मानव को मानव होने का परिचायक है, स्वविवेक के अस्तित्व को अस्वीकार करना तथा अलौकिकता के अस्तित्व को स्वीकार करना बेहद बेवकूफी हैं तथा सभी दुखों के आमंत्रण देने के समान है। अत: अपने को पहचान ही शांति का मूलमंत्र हैं। दुनिया में विश्वशांति के सबसे बड़े वास्तुकार एवं शिल्पीकार आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व महामानव तथागत गौतम बुद्ध पैदा हुए जिन्होंने राजसुख को त्यागकर तपस्या के बल पर अमूल्य ज्ञान को प्राप्त किया। इनके द्वारा दिया गया मंत्र आज विश्व को रोशनी दिखा रहा है।

अंत में मानवीय विकास के लिए भगवान बुद्ध की शिक्षा- सब प्रकार के पापों को न करना, पुण्यों का संचय करना, अपने चित्त को परिशुद्ध करना- यही बुद्ध की शिक्षा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. सिंह, डी.एन., बौद्ध धर्म एवं दर्शन, आशा प्रकाशन, वाराणसी, 1991 ।
2. बौद्ध कमल प्रसाद, बौद्ध धम्म दर्पण, बुद्ध मिशन ऑफ इण्डिया,पटना 2003 ।
3. कोर ग्रुप, वैल्यू ओरियेन्टेड एजुकेशन, भारत सरकार, 1992।
3. जोशी, किरीट (सम्पादित), फिलॉस्फी ऑफ वैल्यू ओरियेन्टेड एजुकेशन : Theory and Practice,अखिल भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, 2002।
5. देवराज, एन.के. (सम्पादित), भारतीय दर्शन : ऐतिहासिक एवं समीक्षात्मक विवेचन, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1929 ।
7. मूल्य एवं शांति शिक्षा, सौरव सिंह, दिल्ली, 2009।
8. रामा राव, के., मॉरल एजुकेशन : अ प्रैक्टिकल एप्रोच, रामकृष्ण इस्टीच्यूट ऑफ मॉरल एण्ड स्पीरिचुअल एजुकेशन, मैसूर, 1986।
9. ओशो, विपस्यना द एसेन्स ऑफ ऑल मेडिटेशन्स, ओशो सेलिब्रेसन सेन्टर ट्रस्ट, 2009 ।
10. शेसाद्री सी., खादर, एम.ए., धाया, जी.एल., एजुकेशन इन वैल्यूज : ए सोर्स बुक, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1992 ।
11. अम्बेडकर बी. आर. : बुद्ध और उनका धम्म, बुद्धम् पब्लिशर्स, अजमेर रोड, जयपुर ।
12. दासगुप्त, एस.एन. भारतीय दर्शन का इतिहास (भाग-1), कलानाथ शास्त्री एवं सुधीर कुमार द्वारा अनुदित, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2003 ।
13. बौद्ध कमल प्रसाद, शिक्षा दर्शन एवं समाज के नूतन आयाम, बुद्ध मिशन ऑफ इण्डिया,पटना 2012 ।
14. बौद्ध कमल प्रसाद, समकालीन भारत की शिक्षा के नूतन आयाम, बुद्ध मिशन ऑफ इण्डिया,पटना 2022 ।
15. अंगने लाल, बौद्ध संस्कृति
16. श्री हवलदार त्रिपाठी, बौद्ध धर्म और बिहार, पटना।

❖❖❖